भावों का संसार

मुनि विजयकुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भावों का संसार

मुनि विजयकुमार

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

– अर्थ सौजन्य –
श्री धर्मेश (डी.सी.)–गीतादेवी, सुपुत्र मुकेश–रेखा, सुनील–रेखा, पौत्र ऋषभ, हर्षित पौत्री ईशिता, प्रगति भिक्षुनगर केलवा के द्वारा

प्रथम संस्करण : २०११

मूल्य : ३०/– (तीस रुपया मात्र)

कम्पोजिंग : सुरेन्द्र सोलंकी, नाथद्वारा

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

भावों का संसार मुनि विजयकुमार मूल्यः ३०/–

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समर्पण

दो–दो महान् कलाकारों ने तराशा है,
जिस महान् व्यक्तित्व को,
शत–शत वंदन करता हूँ,
गुरु महाश्रमण के कर्तृत्त्व को,
न केवल तेरापंथ, अपितु पूरी मानवता के,
जो हैं सचमुच आधार,
उन सुपावन चरणों में,
समर्पित है यह 'भावों का संसार'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंगल संदेश

मनुष्य की चेतना में पोजीटिविटी और नेगेटिविटी दोनों होती है। नेगेटिविटी सुख और आनन्द में बाधक है, जबकि पोजीटिविटी व्यक्ति को हर स्थिति में खुशहाल रखती है। मनुष्य के भीतर छिपी सृजनशीलता भी पोजीटिविटी की स्थिति में ही मूर्तरूप लेती है। साहित्य, संगीत, कला आदि आयाम सृजन चेतना के ही विविध उच्छ्वास हैं। ये ऐसे उच्छ्वास हैं जो आगत और अनागत दोनों युगों की संवेदना को स्पन्दित कर सकते हैं।

मुनि विजयकुमारजी धर्मसंघ के ऐसे अक्षरशिल्पी हैं, जो गीत, गजल, कविता, चित्रकथा आदि विविध विधाओं के माध्यम से अपने समय को सार्थक कर रहे हैं। 'भावों का संसार' उनका नया कविता संकलन है, जिसमें भिन्न-भिन्न रूपकों में भावों को गूंथने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत कविता संग्रह एक नया प्रयोग है। इसकी रचनाओं पर गीत, गजल और कविता सबका प्रभाव परिलक्षित होता है। त्रिवेणी का यह प्रवाह गतिशील रहे, पर तीनों धाराएं अपनी स्वतंत्र अस्मिता के साथ पाठकों को खुद की पहचान कराएं तथा रचनाकार की काव्य चेतना में नया निखार आता रहे, यही मंगल कामना है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

१० नवम्बर, २०११
केलवा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वकथ्य

जैन दर्शन में जीव की अवस्था विशेष को भाव कहा गया है। भाव प्राणी मात्र का स्वरूप है। उसके बिना किसी भी जीव की अवस्थिति नहीं है। इसी आधार पर वहां औदयिक आदि पांच भावों की विवेचना की गई। संस्कृत व हिन्दी साहित्य में भी स्थायी, सात्त्विक और संचारी इन तीन भावों की चर्चा की गई। इन भावों के भेद-प्रभेद भी वहां बतलाये गये हैं।

दर्शन और साहित्य की यह अवधारणा हर व्यक्ति के जीवन में भी रूपायित देखने को मिलती है। 'भावों का संसार' बहुरंगी है। जिस समय जिस तरह के रंग के भाव अन्तर्मन में उभरते हैं व्यक्ति वैसा ही बन जाता है। कुछ भाव ऐसे भी होते हैं जो समय-परिस्थिति को देखकर बाह्य परिवेश में अभिव्यक्त हुए बिना भी रह जाते हैं।

संत पुरुष उन भावों को द्रष्टा बनकर देखने का प्रयास करते हैं। उन भावों को जब शब्दों में बांध दिया जाता है तब वे कविता, गीत, दोहे आदि साहित्य की किसी भी विधा से जुड़कर जन भोग्य बन जाते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पद्य साहित्य में गीत लेखन व संगान मेरा प्रिय विषय रहा है। कविता लेखन भी समय-समय पर होता रहा है। 'भावों का संसार' मेरी कविताओं का छट्ठा संग्रह है। भीतर उभरते भावों को इनमें निबद्ध किया गया है। मेरा मानना है, ये भाव मेरे ही नहीं, जन-जन के हैं। हर व्यक्ति इन कविताओं में अपने मन में मचलते भावों का प्रतिबिम्ब देख सकता है।

अनन्त आस्था के केन्द्र आचार्य श्री तुलसी व अन्तर्प्रज्ञा के धनी आचार्य श्री महाप्रज्ञ का परोक्ष आशीर्वाद व वर्तमान में हमारे शासन सम्राट् परमगुरु श्री महाश्रमणजी का मंगल आशीर्वाद व वात्सल्य मेरे लेखन को प्राणवत्ता प्रदान करने वाला है। मातृहृदया पूजनीया साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी ने मेरी कृति पर मंगल संदेश लिखकर मेरे लेखन को कृतार्थ कर दिया। उनकी कृपा को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। श्रद्धेय मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' की सतत सन्निधि मेरे लिए वरदान स्वरूप है।

'भावों का संसार' की कविताएं पाठकों के जीवन में अक्षय सुख के संचार में निमित्तभूत बने, ऐसी मेरी मंगलकामना है।

भिक्षु विहार, केलवा
११/११/२०११

मुनि विजय कुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
१.	विविध उमड़ते अन्तर् मन के भावों का संसार काव्य है	१
२.	बदलना नर चाहता संसार को	२
३.	जिंदगी में हार जो नहिं मानता	३
४.	मनुज सीख लेता जो समय प्रबन्धन करना	४
५.	दौड़ता दिन रात है नर, पर न मंजिल की खबर है	५
६.	निधियाँ भरी पड़ी है, कोई लेना भी जाने	६
७.	मुस्कुराते आज औरों की कहानी पै	७
८.	भले किसी की मुस्कानों ने तुमको रोका	८
९.	उपकारी के उपकारों को नहीं भुलाना	९
१०.	खिला हुआ फूल सबके मन को लुभाता है	१०
११.	स्वयं से साक्षात्, जिसका हो गया	११
१२.	मुस्कुराना सीख जाये, श्रेष्ठ है वह आदमी	१२
१३.	देखने का नजरिया ही मुख्य कहलाता	१३
१४.	खोना पड़ता है जीवन में कुछ पाने को	१४
१५.	शक्तिपुंज जो संघर्षों से कभी न डरता है	१५
१६.	व्यसनों की गिरफ्त से निकल गया सचमुच वह वीर है	१६
१७.	संयम का होता, जीवन में जब अवमूल्यन	१७
१८.	जाति धर्म के नाम पर इन्सान है बंटता नहीं	१८

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१६. बाहर को बदला पर भीतर को नहीं बदला १६
२०. विचारों की भीड़ में खोया रहता इन्सान २०
२१. अपने में ही रहना, सीख अगर तुम जाते २१
२२. जो दिखता उससे विशाल है भावों का संसार २२
२३. मखमल की शय्या पर, जिनकी होती थी रातें रंगीन २३
२४. यह करना, वह करना, इसी में जिन्दगी गुजर जाती है २४
२५. देखा है दुनियादारी में लोग यहाँ हंसकर मिलते हैं २५
२६. मंदिर में ही ढूँढ़ रहा है कब से तूं भगवान् को २६
२७. दो दिनों की जिंदगी है जान ले इन्सान २७
२८. दीन हीन बन कोई से इन्सान! मांगता क्यों? २८
२९. यह जिन्दगी राहें बदलने में बीत जाती है २९
३०. अनेकान्त सिद्धान्त अगर जीवन में आए ३०
३१. श्रम में निहित सिद्धियाँ, सारी श्रम जीवन का परम रसायन ३१
३२. अगर स्वस्थ रहना अभीष्ट है, रसना पर तुम करो नियन्त्रण ३२
३३. जिन्दगी में हार, जो नहिं मानता ३३
३४. निगाहों के राज को, समझना बड़ा मुश्किल है ३४
३५. यों तो यह मिट्टी का पुतला तन कहलाता ३५
३६. जीवन जीने के लिए विश्वास चाहिए ३६
३७. क्षमा जिसके पास में होती सदा जयकार है ३७
३८. पर उपदेश सरल, अपने को कह पाना आसान नहीं है ३८
३९. बात है न महत्त्व की यह कौन कितना है जिया ३९
४०. बाहर की दूरी सिमटी है, पर भीतर का बढ़ा फासला ४०
४१. बुझे शोले की तरह जिसकी जवानी ४१
४२. बच्चे हैं भविष्य की आशा ४२

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४३. भीतर का चेहरा कुरूप है, बाहर छैल छबीला ४३
४४. कल्पना के लोक में भरता मनुज उड़ान ४४
४५. सावधान करता है नर को, जागरूक प्रहरी है दुश्मन ४५
४६. अगर भला नहीं कर सकते तो औरों की करना न बुराई ४६
४७. तन से सुन्दर, किन्तु नहीं है मन से सुन्दर ४७
४८. बदले चाहे सब कुछ जग में, नैतिक मूल्यों को न बदलना ४८
४९. बाहर से भी भीतर का, संसार बहुत है सुन्दर ४९
५०. जग है एक मुसाफिरखाना, अच्छे-बुरे सभी मिलते हैं ५०
५१. धर्म यदि जन-जीवन में साकार हो जाये ५१
५२. स्वार्थ की आँधी में, रिश्ते टूट जाते हैं ५२
५३. परोपकार सेवा है अच्छी, किन्तु अहं नहीं जागे मन में ५३
५४. सबको आत्म तुल्य तुम समझो, कोई भी है नहीं पराया ५४
५५. बाहर ही तूँ मित्र ढूँढ़ता, खोज लिया होता यदि भीतर ५५
५६. सच्चाई से धर्म को तुमने जिया होता ५६
५७. बलशाली है काल, सभी को छलता है ५७
५८. प्रवाह में बहना, होता है अति आसान ५८
५९. कुबेर का निधान पाने दौड़ता इन्सान ५९
६०. साधा जिसने अपने पर अपना अनुशासन ६०
६१. सदा सालता रहता, मन को लगा वचन का घाव ६१
६२. कोमलता की प्रतिमा नारी, कहां गई उसकी कोमलता ६२
६३. वाणी तो मिठास भरी है, भीतर भरी हुई कड़ुवाहट ६३
६४. जलते इंधन से भी अति दाहक होती है मन की ज्वाला ६४
६५. है बहम की नजर गर, बढ़ती रहेगी दूरी ६५
६६. हकीकत की धरती पर, अब कदम बढ़ाना होगा ६६

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६७. मंजिल दूर नहीं है, संकल्प जगाना होगा ६७
६८. अवसर पर जो जागा, उसको ही मिलता है ६८
६९. भागता फिरता मनुज है धन कमाने के लिए ६९
७०. सपनों का आशियाना है टूटना सुनिश्चित ७०
७१. सौ रोगों की यह एक ही दवाई है ७१
७२. चिन्ताओं की गठड़ी क्यों सिर पे उठाता है ७२
७३. दुपहरी भी बन जाती है रात काली ७३
७४. हंस रहा है आदमी पर हंसी है छलना भरी ७४
७५. आदमी परिवार और समाज के बीच जीता जरूर है ७५
७६. देखता पैनी नजर से नर पराये पाप को ७६
७७. शक्तियाँ छिपी हैं सबमें माने भले न माने ७७
७८. जिन्दगी बीत जाती, अभाव का रोना रोते ७८
७९. घर को रोशन करने एक चिराग काफी है ७९
८०. कहते हैं जो गरूर में, हम किसी से कम नहीं ८०
८१. जीवन है यह हार और जीत का संगम ८१
८२. आशा का चिराग बुझता है, फिर जलता है ८२
९३. जिन्दगी का भार ढोता जा रहा है आदमी ८३
८४. ध्यान औरों पर दिया, खुद पर दिया होता ८४

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१

विविध उमड़ते अन्तर् मन के भावों का संसार काव्य है,
बहुरंगी फूलों-कलियों से सजा हुआ उपहार काव्य है।।

द्वन्द्वों से कोई भी मस्तक रहता सहज नहीं है खाली,
भीतर घटी हुई घटना को देता नव आकार काव्य है।।१।।

रोग-शोक-संताप-तनावों से है घिरी हुई मानवता,
जन-जन के मन के घावों का सुन्दरतम उपचार काव्य है।।२।।

अपने और पराये का है भेद नहीं सामने होता,
नहीं रोकने से जो रुकता चिन्तन का वह ज्वार काव्य है।।३।।

बियावान जंगल को सब्ज बाग बनाकर दिखला देती,
मलिन चित्त वाले लोगों में भरता सत्संस्कार काव्य है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२

बदलना नर चाहता संसार को,
पर बदलता है न निज व्यवहार को।।

स्वयं की कमियाँ उसे दिखती नहीं,
गालियाँ वह दे रहा सरकार को।।१।।

बुद्धि उसकी काम जब करती नहीं,
गलत ठहराता सदा औजार को।।२।।

दाग औरों के मिटाना चाहता,
देख ले वह स्वयं के आकार को।।३।।

भावना कर्त्तव्य की जगती नहीं,
छोड़ना चाहे न पर अधिकार को।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३

जिंदगी में हार जो नहिं मानता,
वही इसके मूल्य को पहचानता।।

पात्र वह बनता अमर इतिहास का,
नया कुछ करना मुझे जो ठानता।।१।।

मैं खिलौना हूँ नहीं तकदीर का,
शक्तियों को वह जगाना जानता।।२।।

भ्रान्तियाँ मिटती प्रबल संकल्प से,
दूर होती एक दिन अज्ञानता।।३।।

ध्यान देता दूसरों की राय पर,
बात अपनी ही नहीं वह तानता।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४

मनुज सीख लेता जो समय प्रबन्धन करना,
अस्तव्यस्तता से पड़ता नहिं उसे गुजरना।।

जो है आज जरूरी, कल पर नहीं छोड़ता,
सघन तनावों की तरणी को आता तरना।।१।।

अध्यापक की डांट नहीं फिर सुननी पड़ती,
काम हो गया ठीक समय पर फिर क्यों डरना।।२।।

नहीं फाइलें अलमारी में धूल चाटती,
रहता सदा प्रवाहित वहां सुखों का झरना।।३।।

समय कीमती तत्त्व, करो उपयोग सही तुम,
अगर चाहते हो तुम, मुझे सफलता बरना।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५

दौड़ता दिन रात है नर, पर न मंजिल की खबर है,
अन्त जिसका है न दिखता, जिन्दगी का यह सफर है।।

है नहीं संतोष मन में, रिक्तता मन को सताती,
धन मिला पर सत्य जाना, परम सुख का यह न घर है।।१।।

नहीं खाने का समय है, नींद पूरी ले न पाता,
शूल कांटों से भरी संसार की लम्बी डगर है।।२।।

प्यास ऐसी जो न विषयों से कभी भी शान्त होती,
उतरना आसान कब यह मनुज मन का तीव्र ज्वर है।।

खोजता भीतर वही पाता, परम निधियाँ यहाँ,
मन धरा पर सदा बहती शान्त रस की ज्यों नहर है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६

निधियाँ भरी पड़ी है, कोई लेना भी जाने,
अनुभवियों की वाणी, माने भले नहीं मानें।।

बाहर के पदार्थ खींचते रहते हैं मन को,
कष्ट उठाते हैं कितने नर धन के दीवाने।।१।।

है संयोग-वियोग जुड़े सब साधन दुनिया के,
फिर भी मानव मूढ़ बना है, इन सबको पाने।।२।।

कई मनुज बन मत्त सुरा में, खो देते जीवन,
ज्यों दीपक की लौ में, गिरकर मरते परवाने।।३।।

भीतर जिसने नजर टिकाई, उसने कुछ पाया,
भाग्य जगाये मानव अपना, स्व को पहचाने।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७

मुस्कुराते आज औरों की कहानी पै,
नजर डालें तनिक अपनी जिन्दगानी पै।।

दिन पलटते आदमी के देर कब लगती,
गर्व करना व्यर्थ है नश्वर जवानी पै।।१।।

रंग आँखों का सदा नहीं एक सा रहता,
अन्त तक जीवन चला कब महरबानी पै।।२।।

समय का है चक्र हरदम घूमता रहता,
बन नहीं उन्मत्त तूं दौलत दिवानी पै।।३।।

भूलता तूँ जा रहा निज शक्तियों को नर!
भरोसा है कर रहा भैरूँ-भवानी पै।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८

भले किसी की मुस्कानों ने तुमको रोका,
पर मुस्कानों में अक्सर नर खाता धोखा।।

चिकनी मिट्टी में होता है, सहज फिसलना,
पर खो देता नर आगे बढ़ने का मौका।।१।।

स्वप्न लोक में विहरण करता मूढ़ मनुज है,
बीच भंवर में फंस जाती जीवन की नौका।।२।।

क्षण भर की मस्ती, सस्ती या महंगी, समझो,
किन्तु बहा ले जाता तेज हवा का झोंका।।३।।

मोहपाश से बच पाना आसान नहीं है,
दिखता नहीं किन्तु यह बन्धन बड़ा अनोखा।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६

उपकारी के उपकारों को नहीं भुलाना,
बन कृतज्ञ जीवन में, कर्ज मुक्त हो जाना।।

अनगिन कष्टों को जीवन में सहती माता,
बन कठोर उसके दिल को, तुम नहीं दुखाना।।१।।

शिक्षित विकसित करते पिता, सजग बन तुमको,
होकर बड़े जिन्दगी में, अभिमान न लाना।।२।।

गुरुजन ज्ञान चक्षु के दाता, अतिशय उपकारी,
बन विनम्र उनके आगे, नित शीश झुकाना।।३।।

जीवन पथ में होते कई व्यक्ति सहयोगी,
कृतघ्नता दिखला सिर पर मत भार बढ़ाना।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०

खिला हुआ फूल सबके मन को लुभाता है,
मुरझा जाता वही ठोकरें सबकी खाता है।।

मुस्कुराहट है, जिसके व्यक्तित्व की पहचान,
कुबेर का असली निधान, वह मानव पाता है।।१।।

काम करता है किन्तु उत्साह है गायब,
किया भी, पर नहीं निज गौरव बढ़ाता है।।२।।

छोटी सी मुस्कान, करती दर्द का अवसान,
तब ही बच्चे को माता लगती विधाता है।।३।।

फूल बनकर जीवन में सीख लिया जीना,
जुड़ जाता उस इन्सान से सबका ज्यों नाता है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११

स्वयं से साक्षात्, जिसका हो गया,
श्रेष्ठ जीवन उस मनुज ने ही जिया।।

बिना जाने स्वयं को सब भार है,
ज्ञान दुनिया का भले ही कर लिया।।१।।

दूसरों को जानना आसान है,
है नहीं इसमें कहीं कुछ भी नया।।२।।

बाहरी विज्ञान का परिणाम है,
घट रही मैत्री, क्षमा, करुणा, दया।।३।।

नजर जिसकी टिक गई है स्वयं पर,
आत्मशोधन बस उसी ने है किया।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२

मुस्कुराना सीख जाये, श्रेष्ठ है वह आदमी,
गम घड़ी में गुनगुनाये, श्रेष्ठ है वह आदमी।।

कड़कती बिजली, गरजता मेघ, तिमिर गहराया,
कदम जो फिर भी बढ़ाये, श्रेष्ठ है वह आदमी।।१।।

तीक्ष्ण शूलों की चुभन, मिलती डगर में है कहीं,
दीनता नहीं जो दिखाये, श्रेष्ठ है वह आदमी।।२।।

एक सा मौसम सदा रहता कहीं पर है नहीं,
संतुलन की लौ जलाये, श्रेष्ठ है वह आदमी।।३।।

परीक्षा से भी गुजरना, मीत! होता है यहाँ,
अंक जो सर्वोच्च पाये, श्रेष्ठ है वह आदमी।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३

देखने का नजरिया ही मुख्य कहलाता,
रंग चश्मे का बदलते सब बदल जाता।।

मानता दोज़ख जिसे है स्वर्ग भी वही,
हकीकत में देखना नर को नहीं आता।।१।।

युधिष्ठिर सुजनों भरा कहता नगर को है,
दुर्योधन दुर्गुण भरा उसको बतलाता।।२।।

दुःख-सुख दोनों यहाँ अस्तित्व में रहते,
एक पाता दुःख दूजा सुख सदा पाता।।३।।

मक्षिका की नजर रहती गन्दगी पर ही,
क्षीर-नीर विवेक करके हंस दिखलाता।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१४

खोना पड़ता है जीवन में कुछ पाने को,
झुकना सीखो मित्र! जगत् अपना बनाने को।।

नमन करना किसी को नहीं है गुलामी,
यह जरूरी अर्हता अपनी बढ़ाने को।।१।।

हित–अहित अपना विचारे आदमी खुद,
नहीं ठुकराते बुरा कहकर पुराने को।।२।।

उद्दण्डता अवरोध है अध्यात्म के पथ पर,
विनय है बाती ज्ञान दीपक जलाने को।।३।।

अक्खड़पन है जहां सम्पदा नहीं वहाँ पर,
बलिदान है जरूरी गुरु को रिझाने को।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१५

शक्तिपुंज जो संघर्षों से कभी न डरता है,
सोने का तपकर ज्वाला में रूप निखरता है।।

आते हैं संघर्ष व्यक्ति का, शौर्य जगाने को,
मेहंदी को पीसे जाने पर रंग उभरता है।।१।।

चट्टानों को भेद, सलिल है मार्ग ढूँढ़ लेता,
हिम्मत वाला कष्टों की वैतरणी तरता है।।२।।

भीरू मन होता जिसका, वह सिद्धि न पाता,
प्रण का पक्का नर, पग-पग पर मंगल वरता है।।३।।

तपे हुए लोगों ने ही इतिहास बनाया है,
ऐसे पूज्य जनों की, यह जग पूजा करता है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१६

व्यसनों की गिरफ्त से निकल गया सचमुच वह वीर है,
मनुज जाति हित बन जाता वह सचमुच एक नजीर है।।

कीच में फंसकर निकलना नहीं होता आसान है,
मुक्त वह होता भविष्य के प्रति जो नर गंभीर है।।१।।

भटक जाना मार्ग से नहीं असंभव संसार में,
पुनः सुपथ पर आ जाता वह होता मानव धीर है।।२।।

जो होते कमजोर नहीं कर पाते साहस जीवन में,
प्रण के पक्के नर बढ़ जाते बाधाओं को चीर है।।३।।

व्यसनलिप्त मनुजों से दूरी जो रखता हरदम यहां,
दुःखों की वैतरणी का पा लेता वह नर तीर है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१७

संयम का होता, जीवन में जब अवमूल्यन,
मानव को तब ही सहना पड़ता है बन्धन।।

बढ़ता जहाँ असंयम, वहाँ रुग्णता बढ़ती,
घेरे रहती है मानव के मन को उलझन।।१।।

इच्छाएँ असीम हैं नभ ज्यों पार न इनका,
दिवा स्वप्न लेता नर खोता आत्म संतुलन।।२।।

नर कृत्रिम अभाव को भरने दौड़ लगाता,
पर विपत्तियों को देता वह स्वयं निमन्त्रण।।३।।

मात्र अपेक्षा पूरी करना ध्येय बने जो,
हो अपराध स्वतः कम, स्वस्थ बने जन जीवन।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१८

जाति धर्म के नाम पर इन्सान है बंटता नहीं,
दीवार चाहे खींच दो आकाश सिमटता नहीं।।

ऊपर के हैं भेद किन्तु भीतर में कोई भेद नहीं,
शाखाएँ हैं विविध, मूल का मूल्य है घटता नहीं।।१।।

कालचक्र घूमता रहता बनते चित्र नष्ट होते,
पर शाश्वत सिद्धान्त यहां पर है कभी मिटता नहीं।।२।।

राष्ट्र-राष्ट्र के बीच दूरी निश्चित आज हुई है कम,
गजब मनुष्यों बीच फासला पड़ा कभी पटता नहीं।।३।।

इंसानों के हृदय में नफरत का विष जो घोलता,
बदनुमा यह दाग ऐसा जो कभी हटता नहीं।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१६

बाहर को बदला पर भीतर को नहीं बदला,
सिद्ध न होता साध्य भले लो मन को बहला।।

नहीं मुखौटों से है स्याल सिंह बन जाता,
आता सम्मुख शेर, तभी जाता वह निगला।।१।।

तुम विभिन्न रंगों से चाहे खूब सजाओ,
किन्तु असलियत में है वह माटी का पुतला।।२।।

गूंज रही है सुधासिक्त संतों की वाणी,
पछताता है जो न समय से पहले संभला।।३।।

बाहर-भीतर एकरूपता जिसने साधी,
रख लेता है वह अपने जीवन को उजला।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२०

विचारों की भीड़ में खोया रहता इन्सान,
अकेला रहना मनुज का है नहीं आसान।।

कभी लगता जिन्दगी सरसब्ज ज्यों उद्यान,
कभी लगता है यही वीरान रेगिस्तान।।१।।

नया करने की सदा नर सोचता रहता,
धरती पर चलता नहीं भरता गगन उड़ान।।२।।

सात पीढ़ियों की चिन्ता नहीं छोड़ती पीछा,
भावना रहती बनालूं मैं अमिट पहचान।।३।।

द्वन्द्वों का घेरा तोड़ पाना सुदुष्कर है,
मार्ग है कांटों भरा पग-पग यहां व्यवधान।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२१

अपने में ही रहना, सीख अगर तुम जाते,
तो पल में न खुशी होते न कभी कुम्हलाते।।

बनना और बिगड़ना, शाश्वत रीत रही है,
है प्रसिद्ध यह सत्य, किन्तु नर इसे भुलाते।।१।।

भीतर का संसार, सदा रहता अनदेखा,
बाहर के ही रंग-रूप, मन को हैं भाते।।२।।

है संयोग-वियोग भरा, मानव का जीवन,
कुछ नहीं ऐसा, जिस पर तुम इतने इतराते।।३।।

अक्षय सुख की सरिता, बहती है भीतर में,
उसमें ले डुबकी, क्यों नहिं आनन्द मनाते।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२२

जो दिखता उससे विशाल है, भावों का संसार,
भरे समन्दर में ज्यों, सदा उमड़ता रहता ज्वार।।

इन्द्रधनुष ज्यों, मानव के होते हैं नाना रूप,
है यथार्थ कम, ज्यादातर चलता जग में उपचार।।१।।

कभी भक्त अनुरक्त कभी तो बन जाता है क्रूर,
कभी सुलगता लावा भीतर कभी झलकता प्यार।।२।।

होता कुछ दिखलाता कुछ ही मन का कुटिल स्वभाव,
इसे समझ पाना है मुश्किल, पण्डित जाते हार।।३।।

भावों पर जो करे नियन्त्रण, है वह मनुज महान्,
जीता है वह स्वस्थ जिन्दगी, जुड़ता स्व से तार।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२३

मखमल की शय्या पर, जिनकी होती थी रातें रंगीन,
काल लगाता है जब घेरा, खुशियाँ उनकी जाती छीन।।

तीव्र सुनामी की चपेट में, सपने सारे ढह जाते हैं,
बह जाते भीषण प्रवाह में, भरे खजाने और जमीन।।१।।

फरमाइश भी काम न आती, नहीं घूस भी है चलती,
बच नहीं सकता है पुलिस के हाथों अपराधी संगीन।।२।।

हाथ-पांव ठंडे पड़ जाते आँखें भी पथरा जाती है,
यम के आगे अकड़ न चलती मुरझा जाता वदन हसीन।।३।।

सात पीढ़ियों की चिन्ता में क्यों खोया रहता इंसान,
कोई नहीं जानता कब हो जायेगी यह बंद मशीन।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२४

यह करना, वह करना, इसी में जिन्दगी गुजर जाती है,
सपनों की सजायी दुनिया एक दिन उजड़ जाती है।।

बड़ा बनने की धुन सवार रहती है, आदमी के मन में,
भाग दौड़ व होड़ में मनमोहक सूरत उसकी बिगड़ जाती है।।१।।

आकाशी उड़ान भरे चाहे कोई भी, चलना धरती पर है,
बरसाती नदी जैसे बहती है, वैसे ही उतर जाती है।।२।।

स्थायी नहीं कुछ भी सब कुछ नश्वर है इस संसार में,
भौतिक संपदा मिलती है, पर पता नहीं किधर जाती है।।३।।

आदमी के आकार में सचमुच है वह भगवान् का रूप,
जो रहता है इस संसार में, पर इच्छाएँ मर जाती हैं।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२५

देखा है दुनियादारी में लोग यहाँ हंसकर मिलते हैं,
लेकिन बढ़ती देख अपर की अक्सर उनके दिल जलते हैं।।

मधुलिपटी भाषा होती है, होठ फड़कते प्रेम भाव से,
हृदय धड़कता आशंका से, छलनाभरे नेत्र खिलते हैं।।१।।

बाहर का आकार देखकर भीतर का अंकन नहीं होता,
कहने को होते उजियारे सच में अंधियारे पलते हैं।।२।।

झूठ ओढ़कर सत्य वसन को, मनमोहक जग में लगता है,
जन जीवन में बड़ी विसंगति फिर भी काम सभी चलते हैं।।३।।

बड़ी कुशलता से मानव दूजों को दे सकते हैं धोखा,
पर सच्चाई सम्मुख आती अपनों से जब वे खुलते हैं।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२६

मंदिर में ही ढूँढ़ रहा है कब से तूं भगवान् को,
भूल रहा क्यों अभिमानी बन जीवन में इंसान को।।

दिल की धड़कन पढ़ न सके, तो अर्जित ज्ञान अधूरा है,
भले पढ़ लिया आगम–गीता–त्रिपिटक और पुराण को।।१।।

हर आत्मा में परमात्मा के दर्शन तूँ नहीं कर पाया,
अपनाया होता प्रभुवर के सुधातुल्य आह्वान को।।२।।

कर में तो माला रखता पर नहीं सरलता है मन में,
सच्चा धार्मिक बनकर बदल पुरानी निज पहचान को।।३।।

अपनी पूजा और प्रतिष्ठा की चिन्ता रहती तुझको,
ध्यान जरा दे, ठेस न पहुँचे औरों के सम्मान को।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२७

दो दिनों की जिंदगी है जान ले इन्सान,
अन्त जाना है तुझे ले साज और समान।।

दिन तो चाँदी जैसे होते सोने जैसी रात,
सूने पड़े आज हैं उनके महल और निधान।।१।।

प्राण प्यारी कामिनी भी छोड़ है जाती,
क्षणिक ऐसी जिंदगी पै क्यों करे अभिमान।।२।।

स्वजन स्नेही देखते इक दिन विदा होते,
अमरता की बात फिर भी कर रहा नादान।।३।।

आज बनकर कल विगत की याद बन जाता,
टल नहीं सकता प्रकृति का यह प्रसिद्ध विधान।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२८

दीन हीन बन कोई से इन्सान! मांगता क्यों?
शक्तिमान तूं देवों से वरदान मांगता क्यों?

करामात ऐसी कांटों में फूल खिला सकता,
फिर भी चलने को पथ तूं आसान मांगता क्यों?।।१।।

है परमार्थ साध्य जब तेरा स्वार्थ बीच में क्यों,
तूं समर्थ दूसरों का बलिदान मांगता क्यों?।।२।।

करता जा कर्त्तव्य, छोड़कर फल की आशा,
औरों के द्वारा अपना सम्मान मांगता क्यों?।।३।।

अमृत की वर्षा होगी, पर पात्र बना खुद को,
बिना पात्रता प्रभु से सिर्फ निधान मांगता क्यों?।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२९

यह जिन्दगी राहें बदलने में बीत जाती है,
सफलता किसी भाग्यशाली को मिल पाती है।।

मन भी है ऐसा कि कहीं पर ठहरता ही नहीं,
नित नई इच्छाओं की ऊर्मियां हिलोरें खाती हैं।।१।।

मोहक आकर्षण जग के हैं खींचते मन को,
स्वीकृत लक्ष्य की बात नहीं याद आती है।।२।।

गुजर जाता है समय, पगडण्डी की तलाश में,
पर यह सोच मंजिल की दूरी को बढ़ाती है।।३।।

भटकाव व्यक्ति के जीवन में तभी होता है कम,
जलती दृढ़ संकल्प की मन में जहाँ बाती है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३०

अनेकान्त सिद्धान्त अगर जीवन में आए,
आग्रह-विग्रह आपस के सारे टल जाए।।

विकसित होती मानव में, चिन्तन की क्षमता,
नहीं निषेधक भाव, वहाँ पर टिकने पाए।।१।।

सहज समन्वय जीवन मे, फिर सध जाता है,
भेदों में अभेद की गाथा, हर जन गाए।।२।।

मैं कहता हूँ, सत्य वही कहता अज्ञानी,
तू भी सत्य कदाचित् यह ज्ञानी बतलाये।।३।।

मिट जाती है, आपस की फिर खींचातानी,
मैत्री के बादल, वसुधातल पर मंडराए।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३१

श्रम में निहित सिद्धियाँ, सारी श्रम जीवन का परम रसायन,
स्वस्थ जिन्दगी यदि जीना है, श्रम से करना नहीं पलायन।।

पाचन तन्त्र बिगड़ जाता है, नहीं भूख भी लगती अच्छी,
रोग घेर लेते हैं तन को, श्रम का होता जब अवमूल्यन।।१।।

मनोदशा भी विकृत रहती, खाकर जो है श्रम नहीं करता,
स्थूलकाय मानव बन जाता, नहीं रहता तन में आकर्षण।।२।।

जो आलस में समय गंवाते, सुख से वे वंचित रह जाते,
कुछ नहीं किया इसी चिन्ता में, मनुज बिताते भावी जीवन।।३।।

श्रम से मन को नहीं चुराना, यदि अपना व्यक्तित्व बनाना,
मेहनत का फल मीठा होता, सजग रहो जीवन में हर क्षण।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३२

अगर स्वस्थ रहना अभीष्ट है, रसना पर तुम करो नियन्त्रण,
सीमा में रहना तुम सीखो, रोगों को मत दो आमन्त्रण।।

तन को वह विद्रूप बनाता, जो है अतिमात्रा में खाता,
पोषण देने वाला भोजन, करता है शरीर का शोषण।।१।।

दुःख पाता फिर पछताता है, डॉक्टर–वैद्यों के घर जाता,
धन का खूब अपव्यय होता, बढ़ती ही जाती है उलझन।।२।।

अतिक्रमण जो करता है, उसका फल स्वयं भोगता मानव,
सम्यक् चिन्तन के अभाव में, बनता नर अपना ही दुश्मन।।३।।

दुःखमय लम्बे जीवन से बेहतर, छोटा जीवन सुखकारी,
मंगलमय हर दिवस बने, है संयम ही इसका आश्वासन।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३३

जिन्दगी में हार, जो नहिं मानता,
वही इसके मूल्य को पहचानता।।

पात्र वह बनता अमर इतिहास का,
कुछ नया करके दिखाऊँ ठानता।।१।।

मैं खिलौना हूँ नहीं, तकदीर का,
शक्तियों को वह जगाना जानता।।२।।

भ्रान्तियाँ मिटती प्रबल संकल्प से,
दूर होती एक दिन अज्ञानता।।३।।

ध्यान देता दूसरों की राय पर,
बात अपनी ही नहीं वह तानता।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३४

निगाहों के राज को, समझना बड़ा मुश्किल है,
आदमी के अंदाज को समझना बड़ा मुश्किल है।।

कहता कुछ, दिखाता कुछ और ही है आदमी,
दिल की आवाज को समझना बड़ा मुश्किल है।।१।।

अतीत के सपने, भविष्य की कल्पनाओं का शोर,
वर्तमान के आज को, समझना बड़ा मुश्किल है।।२।।

बाहर की रौनक खींचती है आदमी के मन को,
भीतर के साज को समझना बड़ा मुश्किल है।।३।।

इशारे से समझ जाता है सकल नजारे को,
उस नर सरताज को, समझना बड़ा मुश्किल है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३५

यों तो यह मिट्टी का पुतला तन कहलाता,
किन्तु यही नौका बन भव दधि पार लगाता।।

है परमार्थ साधना का, यह अद्भुत साधन,
अपनी क्षमता से नर को भगवान् बनाता।।१।।

साधन का क्या अच्छा और बुरा होता है,
सदुपयोग करते उससे वह शोभा पाता।।२।।

राम और रावण दोनों की क्षमता इसमें,
बन जाता नर वैसा, जैसा शौर्य दिखाता।।३।।

वीर, बुद्ध, ईशा, गांधी भी हुए यहाँ पर,
उनके यश का झंडा जग में है फहराता।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३६

जीवन जीने के लिए विश्वास चाहिए,
रोटी से भी मूल्यवान उल्लास चाहिए।।

माना पानी, हवा और आवास जरूरी है,
किन्तु सोच के लिए मुक्त अवकाश चाहिए।।१।।

भौतिक संसाधन के बिना न जीवन चलता,
असली सुख पाने की सच्ची प्यास चाहिए।।२।।

मायूसी में जी लेना भी कैसा जीवन,
हर चेहरे पर सरस सदा मृदुहास चाहिए।।३।।

झूठ आज परिधान सत्य का पहने फिरता,
नैतिकता का चिंहु दिशि दिव्य प्रकाश चाहिए।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३७

क्षमा जिसके पास में होती सदा जयकार है,
जिन्दगी के सफर में पाता नहीं वह हार है।।

चाहता नर और, हो जाता वहाँ कुछ और है,
सहन कर लेता वहाँ होती नहीं तकरार है।।१।।

आग बुझती नीर से, बढ़ती वही है तेल से,
जानकर भी सत्य को नर भूलता हर बार है।।२।।

क्रोध में अन्धा मनुज करणीय क्या है भूलता,
एक क्षण में टूट जाता आपसी व्यवहार है।।३।।

प्रेम से अतिक्रूर दिल भी जीतना आसान है,
संत पुरुषों की कथाओं में मिला यह सार है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३८

पर उपदेश सरल, अपने को कह पाना आसान नहीं है,
नहीं अन्य किन्तु स्वयं को समझाना आसान नहीं है।।

स्खलना और प्रमाद तनिक भी सहन नहीं होता औरों का,
स्व में है बदलाव जरूरी पर लाना आसान नहीं है।।१।।

दीपक तले अंधेरा पलता लोक कहावत है यह सच्ची,
पर निज छिपी मलिन वृत्ति को दफनाना आसान नहीं है।।२।।

अच्छे काम कई करने वाले भी इस दुनिया में होते,
लेकिन आंखों से अमृत रस बरसाना आसान नहीं है।।३।।

निज दर्शन में लग जाता जो श्रेय प्राप्त वह कर लेता है,
प्रभु की इस अमृत वाणी को अपनाना आसान नहीं है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३६

बात है न महत्त्व की यह कौन कितना है जिया,
पूछना है, समय का उपयोग किसने क्या किया।।

सांस लेना ही नहीं बस जिन्दगी का अर्थ है,
श्रेष्ठ नर वह दूसरों का कष्ट जिसने हर लिया।।१।।

छांह देता और फल भी धूप में तरुवर खड़ा,
याद करता उसे जिसने त्याग स्वार्थों को दिया।।२।।

संत वाणी में जगत् में पूज्य कहलाता वही,
शान्त होकर कटुक वचनों का ज़हर जिसने पिया।।३।।

याद रखता धर्म को, व्यवहार को नहीं भूलता,
धन्य वह संतान को संस्कार धन देकर गया।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४०

बाहर की दूरी सिमटी है, पर भीतर का बढ़ा फासला,
यों तो हंसकर ही मिलते हैं, पर चलता हरदम मुकाबला।।

बौद्धिकता के साथ समझदारी भी निश्चित आज बढ़ी है,
सच्चाई घट रही दिनोंदिन, पर वंचन का बढ़ा सिलसिला।।१।।

सहज सरलता और सुजनता चेहरे पर देती न दिखाई,
छलना, कटुता बुराइयों का, जन जीवन में घुसा काफिला।।२।।

ऊपर से जन प्रेम दिखाते, यों मनुहारें भी होती हैं,
ठहर प्रहर भर आगन्तुक जन, होता जाने को उतावला।।३।।

आध्यात्मिक मूल्यों को मिले प्रतिष्ठा यदि मानव जीवन में,
सकल विषमताएँ मिट जाये, हो जाये संसार का भला।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बुझे शोले की तरह जिसकी जवानी,
याद करता कौन है उसकी कहानी।।

लिखा है तकदीर में सब कुछ नहीं वह,
है बड़ा पुरुषार्थ तुम भूलो न वाणी।।१।।

युवा मित्रों! है न सोने की घड़ी यह,
सजग रहना बह कहीं जाये न पानी।।२।।

जिन्दगी जीना जिसे यहाँ आ गया है,
छोड़ जाता जगत्, पर रहती निशानी।।३।।

स्वार्थ हित रहता सतत रत क्या हुआ,
बढ़ो तुम परमार्थ पथ पर, बनो ज्ञानी।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४२

बच्चे हैं भविष्य की आशा,
नहीं जानते छल की भाषा।।

माता और पिता के प्यारे,
इनको पाने हर जन प्यासा।।१।।

प्रिय लगती इनकी किलकारी,
घर में रहता सदा उजासा।।२।।

संरक्षण जो इनको मिलता,
होती है फिर नहीं निराशा।।३।।

संस्कारों की मिले धरोहर,
होगी पूरी हर अभिलाषा।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४३

भीतर का चेहरा कुरूप है, बाहर छैल छबीला,
मन मुरझाया रहता हरदम, लगता वदन गठीला।।

दोहरा जीवन जीता मानव, है विड़म्बना युग की,
सज्जनता का बाना पहना, किन्तु चित्त रंगीला।।१।।

सिद्धान्तों में है यह पक्का, जनता कहती जिसको,
आकर्षण सम्मुख आते ही, पड़ जाता मन ढीला।।२।।

ले जाता प्रवाह जिस दिशि में, उसी ओर बह जाता,
प्रतिस्रोत में चलना मुश्किल, यों है बड़ा हठीला।।३।।

है मुस्कान किन्तु छलना से, दूर सदा हैं रहते,
एक रूप होकर जीना ही, है संतों की लीला।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४४

कल्पना के लोक में भरता मनुज उड़ान,
भूल जाता स्वयं का बहुमूल्य वर्तमान।।

अमर करना चाहता है आदमी निज नाम,
हुआ, होगा भी नहीं परिपूर्ण यह अरमान।।१।।

कोई ना जाने, मौत किस रूप में आये,
पीछे छूट जायेगा सब साज और समान।।२।।

स्वप्न लेता है मनुज पर टूट जाते हैं,
याद आता है तभी विधि का अटल विधान।।३।।

जो सदा करता समय का है सही उपयोग,
जिन्दगी उसके लिए बनती परम वरदान।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४५

सावधान करता है नर को, जागरूक प्रहरी है दुश्मन,
औरों में पनपे न बुराई, इसके लिए समर्पित जीवन।।

यद्यपि भरी गन्दगी भीतर, उसकी तनिक न चिन्ता उसको,
औरों पर न मक्खियाँ बैठे, उन्हें उड़ाता रहता हर क्षण।।१।।

दुश्मन लगता बुरा सभी को, है स्वभाव ऐसा मानव का,
गुण लें उससे, हटा मलिनता साफ सदा वह रखता आंगन।।२।।

जो दोषों से हमें बचाता, उपकारी क्यों कहें न उसको,
घृणा करें क्यों उससे मानव, कैसे कह सकते हैं दुर्जन।।३।।

प्रेमभाव से दुश्मन को भी मित्र बनाया जा सकता है,
महापुरुषों के उज्ज्वल जीवन से मिलता सबको उद्‌बोधन।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अगर भला नहीं कर सकते तो औरों की करना न बुराई,
जीवन सुखी बने अपना, परहित भी बनो नहीं दुःखदायी।।

शक्ति मिली है, कुछ करने की, कष्ट किसी को मत पहुँचाना,
अगर राम नहीं बन सकते तो, रावण तुम मत बनना भाई।।१।।

बुद्धि विभव यह प्राप्त हुआ है, समाधान औरों का करने,
सही राय यदि नहीं दे सकते, बुरी राय से बचो सदा ही।।२।।

काम पुण्य का नहीं होता, तो पाप कार्य से बचो सदा तुम,
स्वयं पुण्यफल को पा लोगे, दूर करो शंका की काई।।३।।

पुष्प सुगन्धित खिला डाल पर, सबके मानस को हरता है,
प्रेम खजाना बांटो सबमें, पनपे आपस में नहीं खाई।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तन से सुन्दर, किन्तु नहीं है मन से सुन्दर,
ऐसे में कैसे पा सकता है नर आदर।।

एक बार आकर्षक लगता रूप बाहरी,
पर ज्यादा नहीं टिक पाता, सन्ध्या का दिनकर।।१।।

कागज के फूलों पर नहीं भँवरे मंडराते,
कारण स्पष्ट सुगन्ध नहीं, हो भले मनोहर।।२।।

भीतर की सुन्दरता यद्यपि नजर न आती,
किन्तु मोह लेता सबका मन वह नरशेखर।।३।।

मनुज विधायक भावों वाला अच्छा लगता,
नहीं निषेधक भावों का पनपे ज्वर भीतर।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४८

बदले चाहे सब कुछ जग में, नैतिक मूल्यों को न बदलना,
आकर्षण के स्रोत बहुत हैं, जीवन में तुम नहीं फिसलना।।

बलशाली का अर्थ नहीं यह, औरों को उत्पीड़ित करना,
बचा किसी को सको कष्ट से, सेवा की संस्कृति में ढलना।।१।।

लगता समय बनाने में घर, समय तोड़ने में नहीं लगता,
यदि सहला न सको कोई को, कोमल दिल को नहीं कुचलना।।२।।

बेइमान बनकर औरों के पथ में कांटे नहीं बिछाना,
अंधकार को दूर हटाने दीपक बनकर हरदम जलना।।३।।

मैत्री–करुणा और सुजनता के बादल बनकर बरसो तुम,
शीतल छांह मिले जन–जन को बनकर वृक्ष सदा तुम फलना।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४६

बाहर से भी भीतर का, संसार बहुत है सुन्दर,
पर है यह दुर्भाग्य, मनुज की दृष्टि न जाती अन्दर।।

शंख सीपियाँ होतीं, वहाँ रत्न भी तो होते हैं,
पर गहराई में उतरे, तब मिलता लाभ अनुत्तर।।१।।

कोण देखने का है अपना और सोचने का भी,
कठिनाई है निज दर्शन को पूर्ण मान लेता नर।।२।।

है नज़रों का दोष, न दिखता भीतर गड़ा खजाना,
तभी मानता नर थोड़ा पा, निज को शाह सिकन्दर।।३।।

रंग-रूप में ही खोया रहता है, मानव का मन,
ऊपर के आकर्षण में खो देता स्वर्णिम अवसर।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५०

जग है एक मुसाफिरखाना, अच्छे-बुरे सभी मिलते हैं,
जीवन सरस बनाते वे ही, जो हर पल हंसते-खिलते हैं।।

कहाँ-कहाँ से चलकर आते राही पथ में मिल जाते,
महक छोड़ जाते वे रंग गुलाबी बन सब में घुलते हैं।।१।।

गुणीजनों का आदर करना भारतीय संस्कृति सिखलाती,
होते हैं निश्चित महान् जो गुण को देख नहीं जलते हैं।।२।।

द्वेष बुद्धि जागृत है जिसमें औरों से वह अड़ता रहता,
अन्त जीत में रहते, अड़ने वालों से जो नर टलते हैं।।३।।

दुश्मन को भी मित्र बनाते, अपनी मृदु मुस्कानों द्वारा,
रहता नित वसंत जीवन में, कल्पवृक्ष बन वे फलते हैं।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५१

धर्म यदि जन-जीवन में साकार हो जाये,
धरती पर ज्यों स्वर्ग की सुषमा नजर आये।।

प्रेम, मैत्री और करुणा भावना जागे,
द्वेष, इर्ष्या और कटुता टिक नहीं पाये।।१।।

क्रूरता, अन्याय, शोषण के हटे बादल,
अहिंसा का सूर्य निज आलोक फैलाये।।२।।

मिटे स्व-पर भेद की संकीर्ण रेखाएँ,
वसुधा एव कुटुम्बकम् का मन्त्र विकसाये।।३।।

तुच्छ आडम्बर-प्रदर्शन से बचे सारे,
सादगी-संतोष हर इन्सान अपनाये।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५२

स्वार्थ की आँधी में, रिश्ते टूट जाते हैं,
बिना स्वार्थ के कोई भी प्रीति न दिखाते हैं।।

मिलते थे जो प्रतिदिन, मुस्कानों की ले सौगात,
दिन फिरते ही आँखें तक वे नहीं मिलाते हैं।।१।।

बीतती थी साथ जिनके, घड़ी एक पल ज्यों,
पास में बैठे नहीं वे जन सुहाते हैं।।२।।

लोग कहते, अजब जोड़ी, गजब की किस्मत,
ले तलाक वे ही नया निज घर बसाते हैं।।३।।

तोड़ देते स्वार्थ के जो, क्षुद्र घेरे को,
धरती के भूषण उन्हें जन सिर झुकाते हैं।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५३

परोपकार सेवा है अच्छी, किन्तु अहं नहीं जागे मन में,
है परमार्थ भावना सच्ची, किन्तु न पड़ जाना बन्धन में।।

छोटा सा कण पत्थर का, भोजन का मजा किरकिरा करता,
रही प्रशंसा दूर, मेजबान की होती निंदा क्षण में।।१।।

फूल मनोहारी लगता, पर शूल चुभन पैदा करती है,
शस्य श्यामला धरती प्यारी, कचरा क्यों फैले आँगन में।।२।।

दूध शुद्ध है, किन्तु फाड़ देती उसको थोड़ी सी काँजी,
बन जाता है वह अपेय, तिक्तता भर जाती कण–कण में।।३।।

'नेकी कर कुएँ में डाल', सूक्त जिसके जीवन में उतरा,
सच में वह सर्वोत्तम मानव, पूजनीय बनता जन–जन में।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५४

सबको आत्म तुल्य तुम समझो, कोई भी है नहीं पराया,
भेद बहुत हैं यद्यपि सबमें पर अभेद भी वहीं समाया।।

औरों की पीड़ा में अपनी पीड़ा का जागे संवेदन,
फलते और फूलते लखकर, पुलकित हो मन–वाणी–काया।।१।।

करके अनुमोदन औरों का, अपना सुख नर क्यों न बढ़ाता,
पर डस लेती मनुज जाति को स्वार्थभाव की नागिन माया।।२।।

जलता है यदि कोई का घर, पड़ोस में लपटें फैलेंगी,
बैठे रहे हाथ सिर पर धर तो समझो संकट मंडराया।।३।।

वसुधा को परिवार मान लो, सबमें तुम अपनत्व जगालो,
स्वर्ग तुल्य जीवन बन जाए, ज्ञानी पुरुषों ने बतलाया।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५५

बाहर ही तूँ मित्र ढूँढ़ता, खोज लिया होता यदि भीतर,
पश्चात्ताप न करना पड़ता, बहता परम शान्ति का निर्झर।।

प्यार दिखाते हैं ऊपर से, भीतर से वे टाँग खींचते,
मित्रों से अच्छे हैं दुश्मन, जो होते हैं शुद्ध स्पष्टतर।।१।।

छलना और प्रदर्शन चलता, दुनियादारी के रिश्तों में,
एक बार फंस गये पंक में, पुनः निकलना होता दुष्कर।।२।।

स्वार्थ सने नाते होते हैं, नहीं पलटते लगती देरी,
कर विश्वास स्वयं का तूँ ज्यों, उग जाये सौभाग्य दिवाकर।।३।।

मित्र बना ले तूँ निज मन को, ताक सहारा मत औरों का,
अपने बलबूते पर तरना होगा, विपदाओं का सागर।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५६

सच्चाई से धर्म को तुमने जिया होता,
परम से साक्षात्, अब तक हो गया होता।।

दशा बदलने की तुम बात किया करते हो,
काश! अपने आप को ही बदल लिया होता।।१।।

सत्य, अहिंसा, नैतिकता को मानते अच्छा,
तुमने सच्चे मन से पालन यदि किया होता।।२।।

उपदेशों का अमृत रहे पिलाते औरों को,
अपने जीवन में भी उस रस को पिया होता।।३।।

हुए हल्के वित्त का करके विसर्जन तुम,
अच्छा होता दिल से उसको भुला दिया होता।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५७

बलशाली है काल, सभी को छलता है,
बिछा रखा है जाल जगत् को दलता है।।

करता नहीं प्रतीक्षा है यह कोई की भी,
जो गफलत में रहते मिली विफलता है।।१।।

करता है व्यवहार काल सब पर इक जैसा,
किन्तु आदमी नित्य नये निज रूप बदलता है।।२।।

बचपन, यौवन और बुढ़ापा कई रूप हैं,
अन्त क्रूर बन सबका यह अभिमान कुचलता है।।३।।

अगणित कथाएं छिपी हैं इसके पीछे,
सज्जन-दुर्जन सब को काल निगलता है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५८

प्रवाह में बहना, होता है अति आसान,
जो मोड़ दे प्रवाह को, होता वही महान्।।

नई सोच का जब तक नहीं होता विकास,
असीम शक्तियों से रहता नर अनजान।।१।।

'नियति टलती नहीं' होता जिसका आदर्श,
कौन बदल सकता उसके भाग्य का विधान।।२।।

करता नहीं पुरुषार्थ, प्रवाहपाती जन,
भूल जाता है मनुज अपनी सही पहचान।।३।।

प्रतिस्रोत में चलना होता अति मुश्किल है,
पर मानव जीवन में वह बनता है वरदान।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५९

कुबेर का निधान पाने दौड़ता इन्सान,
थोड़े खातिर कर देता नर है, सब कुछ बलिदान।।

सोचता रहता सदा नर बनकर लालची,
ईश्वर किसने देखा है, बस पैसा है भगवान्।।१।।

धरती पर चलना, तो पूरा सीखा नहीं,
मूढ़ भरना चाहता आकाश में उड़ान।।२।।

एक ऐसी प्यास है जो कभी बुझती नहीं,
जानकर भी सत्य को रहता सदा अनजान।।३।।

चिन्ता तनावों में बिताता जिन्दगी नर,
जख्म भीतर पर दिखाता है मधुर मुस्कान।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६०

साधा जिसने अपने पर अपना अनुशासन,
हो जाए कृतकृत्य वहाँ पर नियम-नियन्त्रण।।

जब तक नहीं सीख लेता है बच्चा चलना,
तब तक देती माँ, निज सुत को है आलम्बन।।१।।

अनुशासन में चलना, नहीं गुलामी करना,
यह है स्वतन्त्र होने का अति उत्तम साधन।।२।।

कई भूमिकाओं से पड़ता यहाँ गुजरना,
श्रम सिंचन पाकर, विकसाता जीवन उपवन।।३।।

ऊपर का अनुशासन, होता परमावश्यक,
बिना चढ़े सोपान न संभव ऊर्ध्वारोहण।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६१

सदा सालता रहता, मन को लगा वचन का घाव,
नहीं मिटाया जा सकता श्रोता पर पड़ा प्रभाव।।

वचन कीमती रतन, इसे यों ही मत हारो,
अन्य अभाव क्षम्य हैं सारे, इसका हो न अभाव।।१।।

रहते सदा साथ में थे, अच्छा था मेल-मिलाप,
वचनों के कारण, सम्बन्धों में आता अलगाव।।२।।

कुछ कहते, मन में न बुरा, मैंने था किया मजाक,
लेकिन भाषा आती सम्मुख, कौन जानता भाव।।३।।

सीधी, सरल और मधुर भाषा का करें प्रयोग,
सरस बने व्यवहार, मिटे परिवारों का बिखराव।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६२

कोमलता की प्रतिमा नारी, कहां गई उसकी कोमलता,
सज्जा बढ़ी वदन की लेकिन, ओढ़ रखी जैसे श्यामलता।।

लेकर अपना भाग्य जीव, कोई इस धरती पर आता है,
बन जाता परलोक निवासी, मरती जब माँ की वत्सलता।।१।।

कोई नहीं गुनाह किया था, उस आने वाले प्राणी ने,
पर वह बन्दी गर्भ गुहा में, उसका कोई बल नहिं चलता।।२।।

कितने-कितने संस्कारों को लेकर के वह आया होगा,
किन्तु क्रूर जननी के कारण, मिल पाई उसको न सफलता।।३।।

लक्ष्मी-दुर्गा-सरस्वती प्रतिरूप रही नारी पूज्या है,
पाप भ्रूण हत्या का करती दीपक तले अंधेरा पलता।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६३

वाणी तो मिठास भरी है, भीतर भरी हुई कड़ुवाहट,
ऊपर तो शीतलता लगती, पर अन्तर् में है गरमाहट।।

छलनामय व्यवहार जगत् के बाहर कुछ है भीतर कुछ है,
श्यामा कहती, मैं हूँ गौरी, डाल वदन पर अपने घूँघट।।१।।

गड्ढा देता साफ दिखाई, उससे हर कोई बच जाते,
खतरनाक होता वह निश्चित ढका हुआ होता जिस पर पट।।२।।

छिपती नहीं मलिनता तन की, मन की शाब्दिक घटाटोप से,
सच्चाई सम्मुख आती है, पैदा होते तब ही झंझट।।३।।

गिरगिटिये ऐसे लोगों से, सावधान दुनिया रहती है,
समय पूर्व कानों में पड़ जाती उनके पांवों की आहट।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६४

जलते इंधन से भी अति दाहक होती है मन की ज्वाला,
प्रज्ञा के सूरज पर छा जाता है मानो बादल काला।।

करता जब फुफकार क्रोध का नाग नियंत्रण नहीं रहता है,
सात पीढ़ियों के संबंधों के भी लग जाता है ताला।।१।।

निज हित और अहित भेद की बुद्धि वहाँ पर मर जाती है,
मुरझा जाती है पल भर में, गुण फूलों की सुन्दर माला।।२।।

अपना सोचा सच लगता है और कथन सब के हैं झूठे,
इसी अकड़ पकड़ ने अब तक, कितनों को बेघर कर डाला।।३।।

माता-पिता और नारी, कोई की बात समझ नहिं आती,
बन जाता मानव मतवाला, पीकर कटुक क्रोध की हाला।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६५

है बहम की नजर गर, बढ़ती रहेगी दूरी,
व्यवहार ऊपरी है, कैसे हो चाह पूरी।।

अमृत के बोल मुँह पर, भीतर जहर भरा है,
फिर चाहते हैं बनना, वे मनुज वंशधूरी।।१।।

अपनत्व भाव ऐसों से, जुड़ कभी न सकता,
मिलते हैं मुस्कुरा कर, पीछे चलाते छूरी।।२।।

अन्दर वे और कुछ हैं, बाहर वे और कुछ हैं,
ऐसे जनों की रहती, है साधना अधूरी।।३।।

विश्वास पर टिके हैं, सम्बन्ध आपसी सब,
जीवन में पाने खातिर, खोना भी है जरूरी।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६६

हकीकत की धरती पर, अब कदम बढ़ाना होगा,
मृगमरीचिका में फँसे मन को समझाना होगा।।

सपनों के संदेशों से मुँह मीठा कब होता है,
सच्चाई को सरल हृदयता से अपनाना होगा।।१।।

क्या होगा कोरे अतीत की गाथा गाने से भी,
चालू जीवन शैली में बदलाव लाना होगा।।२।।

कल्पना के इन्द्रधनुष यों मनमोहक लगते हैं,
किन्तु नाव को मांझी बन तट तक पहुँचाना होगा।।३।।

अनुपम अक्षय कोष शक्तियों का है तेरे भीतर,
यथार्थ की वेदी पर, श्रम का दीप जलाना होगा।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६७

मंजिल दूर नहीं है, संकल्प जगाना होगा,
जीवन में सफल बनने, आलस्य घटाना होगा।।

तुम सोचते हो भाग्य में लिखा वह मिलेगा,
यह सोच दुर्बलों की, इसको मिटाना होगा।।१।।

चट्टानें यदि आ जायें, जीवन के इस सफर में,
पौरुष की छैनी लेकर, उनको हटाना होगा।।२।।

फिसलन भरी डगर है, तुम सावधान रहना,
मनमोहक प्रलोभनों से, खुद को बचाना होगा।।३।।

निष्पत्ति चाहता जो, पड़ता उसे है तपना,
अपने कदम सुपथ पर हरदम बढ़ाना होगा।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६८

अवसर पर जो जागा, उसको ही मिलता है,
निद्रा को जिसने त्यागा, वह भाग्य बदलता है।।

एक क्षण का जागरण, जीवन उजाल देता है,
जगने वाले पाते, पग-पग पर सफलता है।।१।।

करने की तमन्ना है, तो आज ही कर लो,
इक सम समय न रहता सूरज भी ढलता है।।२।।

साँसों का यह कारवाँ, रोके नहीं रुकता,
जो लाभ उठा लेता, उसका ही भाग्य खिलता है।।३।।

कल की आशा करके, मत काल गंवाना तूँ,
देख, जिन्दगी का यह दीपक टिमटिम जलता है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६९

भागता फिरता मनुज है धन कमाने के लिए,
स्वप्न लेता गगन में सीढ़ी लगाने के लिए।।

यों सभी भरते यहाँ पर खोपड़ी भरती नहीं,
यत्न करता आग से घी को बुझाने के लिए।।१।।

है भवन, पर्याप्त रोटी पर नहीं मन तृप्त है,
सोचता है चाँद पर कोठी बनाने के लिए।।२।।

भूल जाता कई आये और आयेंगे यहाँ,
दम्भ भरता व्यर्थ अपने को बचाने के लिए।।३।।

क्या सही है, क्या गलत है, बात सारी गौण है,
यत्न करता एक लक्ष्मी को मनाने के लिए।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७०

सपनों का आशियाना है टूटना सुनिश्चित,
मिट्टी के इस घड़े का है फूटना सुनिश्चित।।

कोई कुबेर बनता सपनों की जिन्दगी में,
अनुपम अगम खजाने का खूटना सुनिश्चित।।१।।

नर अक्लमंद खुद को कितना न क्यों बचाले,
पथ में खड़े लूटेरे यहाँ लूटना सुनिश्चित।।२।।

है नियति का तकाजा संयोग सब लचीले,
सम्बन्ध है न स्थायी सब छूटना सुनिश्चित।।३।।

टिकते कदम धरा पर नभ में नहीं हैं टिकते,
है दैव आज राजी कल रूठना सुनिश्चित।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७१

सौ रोगों की यह एक ही दवाई है,
आत्म विश्वास में सब सिद्धियाँ समाई है।।

किसी का न हुआ, न होगा भी जमाना,
तूँ स्वयं को मोड़ ले, इसी में भलाई है।।१।।

मिटता नहीं भीतर का जब तक अंधेरा,
निधियाँ पड़ी सम्मुख न देती दिखाई है।।२।।

बहमीली आँखों से जहाँ देखा जाता,
सदा एक थे, उनकी होती जुदाई है।।३।।

बढ़ते कदम रुक जाते हैं, अनायास ही,
रिश्तों में पड़ जाती संशय की खाई है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७२

चिन्ताओं की गठड़ी क्यों सिर पे उठाता है,
रुदन में क्यों हंसी के तूँ पल भुलाता है।।

चाहा–अनचाहा होता रहता जीवन में,
समय कैसा क्यों न आये, गुजर जाता है।।१।।

बादलों की ओट में ढका न रहता सूरज,
हार मानता कभी न भू को जगमगाता है।।२।।

नियति के अधीन हो जीना न अच्छा है,
पतझड़ के बाद निश्चित वसन्त आता है।।३।।

हाथ पर धर हाथ जो मनुज बैठ जाता है,
प्राप्त अवसर को अधिकतर वह गंवाता है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७३

दुपहरी भी बन जाती है रात काली,
विपदाओं से भरी हुई यह गन्दी नाली।।

दिल जो ओरों का दर्द है समझता,
दर्दी बना देती उसको सुरा की प्याली।।१।।

गूँजता था नाम जिनका सबके अधर पर,
कर गये वे एक दिन निजकोश को खाली।।२।।

पीकर जाम खोये जो रहते सदा थे,
दे रही संतान उनको आज है गाली।।३।।

खुद का किया खुद को ही भोगना है,
केंसर से बन जाती यह देह ज्यों जाली।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७४

हंस रहा है, आदमी पर हंसी है छलना भरी,
मलिनता मन में छिपी है, वाणी है अमृत झरी।।

बांटता है प्रेम भीतर से वही है काटता,
देख सूरत, निगाहें हर एक की सहमी डरी।।१।।

मुखौटों की जिन्दगी में असलियत है घट रही,
स्रोत बहते गन्दगी के दिख रही है जो परी।।२।।

भेद बाहर और भीतर का मिटा जिसने दिया,
पा लिया उसने शिखर को दुःख वैतरणी तरी।।३।।

कपट का पट छोड़ जो ऋजुभाव को स्वीकारता,
पूज्य बनता जगत् में निधियाँ सकल उसने वरी।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७५

आदमी परिवार और समाज के बीच जीता जरूर है,
पर स्वार्थ का भाव कर देता उसे एक दूजे से दूर है।।

सेवा, परोपकार, सहयोग के आदर्श को वह जानता है,
लेकिन करने में नहीं, सिर्फ बोलने में बड़ा शूर है।।१।।

त्याग करता भी है तो मानो बड़ा अहसान करता है,
बोलता मगरूर होकर, ज्यों भाई नहीं, कोई मजदूर है।।२।।

दूसरों को देखकर भी वह नहीं कुछ सीखता है,
ईश्वर का तो नहीं, फिर पता नहीं किसका कसूर है।।३।।

इंसानियत के तरीके से मनुज व्यवहार करता जो,
हर मन को मोहने वाला, इंसानों में कोहिनूर है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७६

देखता पैनी नजर से नर पराये पाप को,
याद सब कुछ, भूल जाता किन्तु अपने आपको।।

स्फटिक सा उज्ज्वल स्वयं को मानता मानव सदा,
चाहता रखनी बनाये असलियत की छाप को।।१।।

बचाने खुद को यहाँ क्या-क्या मनुज करता नहीं,
किन्तु जन पहचान लेते दूर से पदचाप को।।२।।

जानकर अनजान बनता आदमी बहुधा यहां,
छिपा लेता कुशलता से आंसुओं की भाप को।।३।।

स्वयं की ही खुशी को वे मान लेते मुख्य हैं,
मानते हैं गौण दूजों को दिये संताप को।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७७

शक्तियाँ छिपी हैं सबमें माने भले न माने,
किन्तु शक्ति सम्पन्न वही जो उनको पहचाने।।

बेकार नहीं है कोई भी इंसान यहाँ पर,
सत्य कहा है, कोई काम लेना भी जाने।।१।।

लघुकाय बीज तरुवर बन फूलता धरा पर,
पोषण बहुत जरूरी रमणीय रूप पाने।।२।।

आँखों को मूंद चलता रहता सदा भटकता,
श्रम का किया नियोजन पहुँचा सही ठिकाने।।३।।

लक्ष्मी भी रूठ जाती उद्यम जहाँ नहीं है,
चिहुँ ओर गूंजते हैं साहस के ही तराने।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७८

जिन्दगी बीत जाती, अभाव का रोना रोते,
चन्दन को समझ इंधन सिर भार ढोते-ढोते।।

आश्चर्य पास में जो उसको भुला दिया है,
कल्पित अभाव में नर अवसर अमोघ खोते।।१।।

औरों की महफिलों की वे देखते सजावट,
भावी की कल्पना के मोती मनुज हैं पोते।।२।।

लगती है जिन्दगी में जब भी जरा सी ठोकर,
आशा का छोड़ दामन पल में निराश होते।।३।।

जब भी वे जागते हैं चिन्ता उन्हें सताती,
सिर सोड़ ओढ़कर वे रहते सदा हैं सोते।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७९

घर को रोशन करने एक चिराग काफी है,
सुरभित करने दिग्दिगन्त को बाग काफी है।।

निर्माण के लिए दिन-रात खपना पड़ता है,
ध्वंस के लिए चिनगारी की आग काफी है।।१।।

गुणीजनों की पूजा होती, इज्जत सब देते,
सुयश घटाने नर का बस एक दाग काफी है।।२।।

भ्रान्तियों को पालते रहते यहां कुछ नर,
पर सच्चाई जानने भीतर की जाग काफी है।।३।।

औरों के चलाये चलने से बढ़ेंगी उलझनें ही,
लक्ष्य पाने अपना सही दिमाग काफी है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८०

कहते हैं जो गरूर में, हम किसी से कम नहीं,
भूल जाते जग रहेगा पर रहेंगे हम नहीं।।

आए कई आयेंगे भी हमारे जैसे नर यहां,
यहाँ कोई एक का ही गूंजता सरगम नहीं।।१।।

प्रतिस्पर्धा का जमाना कौन टिक सकता सदा,
कौन किसको याद करता, अहं में कुछ दम नहीं।।२।।

आँख के पट्टी लगाकर चल रहा है आदमी,
सच्चाई को जानता पर टूटता है भ्रम नहीं।।३।।

ऊगता है अस्त होता सूर्य प्रतिदिन देखते,
एक जैसा कभी रहता धरा पर मौसम नहीं।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवन है यह हार और जीत का संगम,
कहीं हंसी तो कहीं देखने को मिलता गम।।

खट्टे-मीठे अनुभव भी होते रहते हैं,
मिलते मनुज अधम हैं और कहीं पै उत्तम।।१।।

कुछ होता है अच्छा और बुरा भी होता,
सदा सरीखा रहे जमाना, है झूठा भ्रम।।२।।

अपनी करणी पार उतरणी सही कहावत,
आरोहण अवरोहण का चलता रहता क्रम।।३।।

द्वन्द्वों में निर्द्वन्द्व रहा वह बना विजेता,
पुरस्कार पाने का यह अवसर दुर्लभतम।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८२

आशा का चिराग बुझता है, फिर जलता है,
जिन्दगी का यह लम्बा सफर यों ही चलता है।।

सोचने में बीत जाता है वक्त आदमी का,
पर बिना पुरुषार्थ कब भाग्य बदलता है।।१।।

स्वर्ण मृग की तलाश में भटकता है आदमी,
पर भाग-दौड़ में वह अपने को ही छलता है।।२।।

बो दिया बीज, अंकुर भी देता दिखाई,
सिंचन बिना कोई तरुवर कब फलता है।।३।।

कदम टिके हैं आदमी के धरती पर,
आकाश के तारे तोड़ने मन मचलता है।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८३

जिन्दगी का भार ढोता जा रहा है आदमी,
ऊपर हंसता भीतर रोता जा रहा है आदमी।।

प्राप्त कर सब कुछ, अभागा मानता खुद को,
अमृत से पांवों को धोता जा रहा है आदमी।।१।।

एक डग यदि और भरता, सफलता तो सामने थी,
थोड़े में ही अधिक खोता जा रहा है आदमी।।२।।

उठ गया फिर भी मनुज आलस्य को नहिं छोड़ता है,
जागकर फिर से हा! सोता जा रहा है आदमी।।३।।

अभी क्या जल्दी, समय है सामने काफी अभी,
कल्पना के मोती पिरोता जा रहा है आदमी।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ध्यान औरों पर दिया, खुद पर दिया होता,
अपनी सूरत पर भी कुछ तो गौर किया होता।।

दुरबीन बन निहारते रहे, पराये दोष,
दर्पण में अपना चेहरा पहचान लिया होता।।१।।

ओरों को उपदेश देना है बड़ा आसान,
काश! जीवन में उसे कुछ तो जिया होता।।२।।

घूंट अमृत का पिलाते रहे दूसरों को,
अच्छा रहता जीवन में खुद भी पिया होता।।३।।

पृष्ठ पूरा भरा दूजों की कहानी से,
स्वहित रख लिया पन्ने का हासिया होता।।४।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनि विजयकुमार

संक्षिप्त परिचय

- जन्म : फाल्गुन शुक्ला ६, वि.सं. २००६, सुजानगढ़
- दीक्षा : आषाढ़ शुक्ला १२, वि.सं. २०२३, बीदासर
- यात्राएं : बंगाल, बिहार, नेपाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, कर्णाटक, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल, दिल्ली, पंजाब प्रांत आदि।
- महामनस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती।
- तेरापंथ मनीषी मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' के सहवर्ती
- रुचि : अध्ययन, लेखन, संगीत, जन-संपर्क आदि।

रचित कृतियां

१. मधुकलश
२. मधुमाला
३. स्वर माधुरी
४. सुधा घूंट
५. मधुकोष
६. मधुवन
७. झंकार
८. संगीत सुषमा
९. गीत माधुरी
१०. संगीत सरिता
११. नया दौर
१२. नई पौध
१३. नई भोर
१४. खुली आंख
१५. एक और उड़ान
१६. मुस्कान
१७. संतों के बोल
१८. गुरु चालीसा
१९. आदिम गाथा
२०. संवाद सरिता
२१. निर्माण की दहलीज पर
२२. बात-बात में बोध
२३. टी.वी. पुराण (हिन्दी व मराठी में)
२४. असली टॉनिक
२५. सफलता के सोपान
२६. बदलना सीखो
२७. व्याख्यान वाटिका
२८. युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी चित्र कथा (हिन्दी व अंग्रेजी में)
२९. विनय से विद्या
३०. जैसा संग वैसा रंग (चित्र कथा)
३१. जैन जीवन शैली (चित्र कथा)
३२. Personality in Rhythm
३३. Inspiring Rays
३४. संवादों में जीवन विज्ञान व अन्य।

ISBN 81-7195-206-2

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org